Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN: 3048-6513 (Online)
Volume: 2 Issue: 4 || September 2025 || DOI: 10.5281/zenodo.17222803

बौद्ध धर्म में राजनीतिक विचार

डॉ. रायन त्र्यंबकराव महाजन[1]

सारांश : प्राचीन काल से ही भारत को वैश्विक स्तर पर एक महान सभ्यता माना जाता रहा है। भारत में अनेक संस्कृतियों और धर्मों के लोग रहते हैं। भारत ने इतिहास, संस्कृति और दर्शन के आधार पर वैचारिक स्तर पर विश्व में अपना स्थान बनाए रखा है। भारतीय राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विचार वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों, जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन में मिलते हैं। जब जैन धर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा था, तब बुद्ध ने एक धर्म दिया, जो आज तक विश्व में विद्यमान है। प्रत्येक धर्म का अपना दर्शन होता है। इसी प्रकार, बौद्ध धर्म का एक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और दार्शनिक दर्शन है। बुद्ध ने सद्गुणों और नैतिक आचरण के साथ जीवन जीने पर बल दिया। बौद्ध धर्म एक नैतिक व्यवस्था थी, जिसका उद्देश्य वैदिक धर्म में व्याप्त बुराइयों को दूर करना था। बौद्ध धर्म सर्वाधिक सफल रहा क्योंकि यह पूर्व-वैदिक और अवैदिक तपस्वी परंपरा का एक अंग है। यह व्यवस्थित और स्पष्ट अभिव्यक्ति थी। जिस समय बुद्ध ने अपने विचारों का प्रसार किया, उस समय उन्होंने तीन बातों पर बल दिया, अर्थात् बुद्ध, संघ और धम्म। बौद्ध राजनीतिक विचारकों के अनुसार, एक राज्यविहीन और अराजक समाज सभी के लिए खतरनाक है। ऐसी स्थिति में, यदि राजा धर्म और नैतिकता का पालन करे, तो राजतंत्र प्रजा को सुख प्रदान कर सकता है। राज्य के उद्भव के संबंध में अनेक विचारधाराएँ हैं। हालाँकि, बुद्ध के अनुसार, उनका मानना है कि राज्य का निर्माण सामाजिक अनुबंध के माध्यम से हुआ था। भारत में, ऐतिहासिक अहिंसा के सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रयोग बुद्ध के दर्शन में हुआ, जब उपनिषदों के लेखकों ने वैदिक यज्ञों की क्रूरता के बारे में बताया। यहीं से शाकाहार के सिद्धांत का विकास हुआ। पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में, बुद्ध ने अपनी मुख्य शिक्षाओं की वकालत और उन पर ज़ोर दिया, उन्हें समाहित किया, एक सैद्धांतिक आधार प्रदान किया और उन्हें अतुलनीय बनाया। धर्म और शांति के प्रतीक (धर्मचक्र) बौद्ध धर्म ने अहिंसा के क्षेत्र में एक मौलिक योगदान दिया। प्रस्तुत शोध निबंध बौद्ध काल के राजनीतिक विचारों पर प्रकाश डाल रहा है।

बीज शब्द : बौद्ध धर्म, राजनीतिक विचार

शोध विधि

शोध करते समय, व्यक्ति को शोध विधि को अपनाना होता है। शोध की गुणवत्ता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए, व्यक्ति को शोध विधि को अपनाना होता है। इस शोध निबंध के लिए शोध विधि का उपयोग किया गया है। इस शोध निबंध में ऐतिहासिक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

तथ्य संकलन के साधन

शोध निबंध लिखते समय, तथ्य संकलन हेतु द्वितीयक स्रोतों के रूप में विभिन्न पुस्तकों, संदर्भ पुस्तकों, मराठी विश्वकोश, सामाजिक विश्वकोश, समाचार पत्रों आदि का उपयोग किया जाता है। इस शोध निबंध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

शोध निबंध का उद्देश्य

[1] राजनीति विज्ञान विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर – 440033

1. बौद्ध धर्म के राजनीतिक विचारों का अध्ययन

अध्ययन का महत्व

इस शोध निबंध में विचार अत्यंत महत्वपूर्ण होंगे। आधुनिक समय में अनेक विचार, संप्रदाय और धर्म निर्मित हो रहे हैं। हालाँकि, प्राचीन काल से चला आ रहा धर्म बौद्ध धर्म है। बौद्ध धर्म में गौतम बुद्ध के विचार समाहित हैं। उसके बाद, उनके अनुयायियों ने इन विचारों में मूल्यवर्धन किया। बौद्ध धर्म का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका राजनीतिक दर्शन आज के आधुनिक समय में आवश्यक है। बौद्ध धर्म के राजनीतिक विचार आज की परिस्थिति में अत्यंत उपयोगी होंगे। इसलिए, इस शोध निबंध में राजनीतिक विचारों का अध्ययन महत्वपूर्ण होगा।

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध ने की थी। बौद्ध धर्म का उदय सुखों और प्रलोभनों के त्याग से हुआ था। ब्राह्मण काल में बौद्ध धर्म का उदय हुआ और वह स्थिति स्वाभाविक थी। ब्राह्मणवाद की भावना असमानता की थी जबकि बौद्ध धर्म की भावना समानता की थी। बौद्ध धर्म ब्राह्मणवाद के लिए एक चुनौती की तरह था। क्योंकि बौद्ध धर्म चातुर्वर्ण्य व्यवस्था के विरुद्ध था। गौतम बुद्ध ने सारनाथ में अपने उपदेश में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया। जिसमें दुख का सिद्धांत, दुख का कारण, दुख का निरोध और दुख निरोध का मार्ग शामिल है। बुद्ध के अनुसार दुख का कारण अत्यधिक इच्छा है।[1] बौद्ध धर्म की स्थापना एक ब्राह्मणवाद विरोधी आंदोलन के रूप में उभरी प्रतीत होती है। समय के साथ बौद्ध धर्म में दो संप्रदाय प्रकट होते हैं। एक हीनयान और दूसरा महायान। हीनयान संप्रदाय बौद्ध धर्म के मूल स्वरूप को दर्शाता है, जबकि महायान संप्रदाय करुणा पर बल देता है। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए चार संगीति आयोजित की गईं। इन संगीति के माध्यम से बुद्ध की शिक्षाओं को एकत्रित, शुद्ध और समय-समय पर संशोधित किया गया। परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म एक नए रूप, नए जीवन और नए उत्साह के साथ विकसित हुआ। प्रथम बौद्ध संगीति राजगृह में आयोजित की गई थी। इसमें बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन था। उपदेश, साधना और सिद्धांत नामक तीन भागों में विभाजित इन शिक्षाओं को त्रिपिटक कहा जाता था। द्वितीय संगीति वैशाली में आयोजित की गई थी, जिसमें इन ग्रंथों का संशोधन किया गया था। तृतीय संगीति सम्राट अशोक द्वारा आयोजित की गई थी, जिसमें बौद्ध साहित्य का अंतिम संकलन किया गया था। चतुर्थ संगीति कनिष्क के शासनकाल में आयोजित की गई थी, जिसमें प्राचीन बौद्ध ग्रंथों पर भाष्य लिखे गए थे। बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग और निर्वाण हैं। बुद्ध ने अपनी शिक्षाएँ पाली भाषा में दीं। ये त्रिपिटक में संकलित हैं। त्रिपिटक तीन भागों में विभाजित है। विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक। इन पिटकों में कई उप-ग्रंथ भी हैं। सुत्त पिटक में धम्मपद शामिल हैं। धम्मपद लोकप्रिय हैं।

प्रारंभिक भारतीय बौद्ध धर्म के संदर्भ में हिंसक गतिविधि को मोटे तौर पर निम्नलिखित चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. संगठित संघर्ष, जैसे युद्ध, लड़ाई आदि और असंगठित संघर्ष जैसे हत्या, आत्महत्या, गर्भपात और स्वैच्छिक मृत्यु आदि।
2. पशु बलि और कभी-कभी मानव बलि सहित बलि अनुष्ठानों के माध्यम से हिंसा।
3. शिकारियों, कसाईयों, मछुआरों आदि के हाथों हिंसा, जिनका उपयोग मानव भोजन और अन्य आवश्यकताओं - विशेषकर औषधीय प्रयोजनों के लिए किया जाता था। इस प्रकार, मनुष्यों द्वारा मांस और मछली का सेवन हिंसा का एक महत्वपूर्ण रूप था।
4. कृषि कार्य और अन्य संबंधित गतिविधियों जैसे खुदाई, सिंचाई, खेतों की जुताई, फसलों की कटाई, घास और पेड़ों तथा एकेन्द्रिय जीवों द्वारा पेड़-पौधों, मिट्टी आदि को नष्ट करने वाली हिंसा।

बौद्ध धर्म में राजनीतिक विचार

भारत के अन्य धर्मों की तरह, बौद्ध धर्म में भी राजनीतिक विचार व्यक्त किए गए। गौतम बुद्ध द्वारा राजनीतिक मुद्दों पर प्रस्तुत दर्शन और अन्य अनुयायियों द्वारा इसमें किए गए परिवर्धन को राजनीतिक दर्शन के रूप में जाना जाता है। भारत में, राजनीतिक विचार की तीन परंपराएँ थीं: अर्थशास्त्र-परंपरा, धर्मशास्त्र-स्मृति-परंपरा और बौद्ध-परंपरा। गौतम बुद्ध को राज्य और राजनीति पर चर्चा करने में कोई रुचि नहीं थी और उन्होंने उन अर्थशास्त्र के शिक्षकों की क्षत्रिय कहकर निंदा की जो लगातार राजनीति और अवसरवाद के बारे में सोचते रहते थे।[2] लेकिन उनके लिए राज्य और राजनीति के बारे में सोचना भी आवश्यक था। धम्म चक्र चलाने के बाद, उन्होंने धर्म का प्रचार करने के लिए लगभग 40-45 वर्षों तक व्यापक यात्राएँ कीं, इस दौरान उन्होंने अपने विचारों का प्रसार किया। बौद्ध चिंतन में बुद्ध, संघ और धम्म तीन महत्वपूर्ण बातें बन गईं। हालाँकि, बुद्ध ने धम्म सिद्धांत की वकालत की। प्रो. बी. जी. गोखले के अनुसार, बौद्ध राजनीतिक चिंतन में तीन सिद्धांत महत्वपूर्ण थे। पहला सिद्धांत यह है कि राजा के हाथों में अपार शक्ति होती है और हिंसा, युद्ध, दंड और शोषण इस शक्ति की विशेषताएँ हैं। दूसरा सिद्धांत यह है कि राजा धन के लोभी, मनमौजी और हिंसक होते हैं। तीसरा सिद्धांत यह है कि राजाओं के अभाव में मत्स्य न्याय शुरू हो जाता है। समाज में अराजकता फैल जाती है।[3] समाज को नियंत्रित करने के लिए राज्य आवश्यक है। राज्यविहीन समाज के सभी के लिए खतरा बनने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में, राजा को हमेशा धर्म और नैतिकता का पालन करना चाहिए। यदि ऐसा किया जाए, तो राजतंत्र प्रजा को सुख प्रदान कर सकता है। बुद्ध ने कहा कि राज्य ईश्वर द्वारा नहीं, बल्कि सामाजिक अनुबंध द्वारा निर्मित है। समाज में "मैं और तू" की भावना उत्पन्न हुई और मन में द्वन्द्व उत्पन्न हुआ और जब मत्स्य आखेट आरम्भ हुआ, तो प्रजा ने सामूहिक रूप से अपने में से एक को राजा चुना। इस राजा को महासम्मत कहा जाता था। बुद्ध ने अपने सामाजिक और राजनीतिक विचारों को प्रस्तुत करते हुए बौद्ध धर्म के राजनीतिक चिंतन को व्यक्त किया। उनके राजनीतिक विचारों के कुछ मुख्य पहलुओं का उल्लेख किया जा सकता है। एक यह कि राज्य मानव जीवन के कल्याण के लिए एक अनिवार्य संस्था है। जिस समाज में अराजकता होती है, वहाँ बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को निगल जाती हैं और अराजकता को नियंत्रित करने के लिए राज्य के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। दूसरा यह कि राज्य की सर्वोच्चता बल पर आधारित या ईश्वर द्वारा निर्मित नहीं है। राज्य का निर्माण सामाजिक प्रक्रिया का अंग है और यह लोगों की आपसी सहमति से निर्मित राज्य है। इसलिए इस परंपरा में राजा को 'महासम्मत' कहा जाता था। तीसरा यह कि इस परंपरा में दण्ड और धर्म के बीच द्वन्द्व था। यद्यपि राज्य आवश्यक है, राजा को राज्य के मामलों का प्रबंधन करने के लिए धर्म का उपयोग करना चाहिए। चौथी बात यह है कि बौद्ध विचारकों ने चक्रवर्ती राजा का विचार प्रस्तुत किया और प्रतिपादित किया कि राजा और धर्मचक्र प्रवर्तन करने वाला महापुरुष एक ही सार के होते हैं और उस राज्य में समाज और प्रजा का गुण राजा के धार्मिक गुण से निर्धारित होता है। अंततः, राजा का उद्देश्य दस राजधर्मों का पालन करते हुए शत्रुता और अराजकता को समाप्त करते हुए धर्मराज्य की स्थापना करना होता है। पराजित शत्रु को मारा नहीं जाता, बल्कि उसे मित्रता का विकल्प दिया जाता है।[4] इस प्रकार, हम देखते हैं कि बौद्ध राजनीतिक चिंतन में नैतिकता का गहरा अर्थ निहित है।

बौद्ध राजनीतिक चिंतन में राज्य की प्रधानता के सिद्धांत को महत्वपूर्ण माना गया। केवल राज्य की प्रधानता का सिद्धांत ही महत्वपूर्ण नहीं था, बल्कि सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का प्रश्न भी महत्वपूर्ण था। क्योंकि ब्राह्मण और उपनिषदों का मत था कि ब्राह्मण मनुष्य के मुख से, क्षत्रिय हाथों से, वैश्य जांघों से और शूद्र पैरों से उत्पन्न हुए हैं। परन्तु गौतम को यह दृष्टिकोण स्वीकार्य नहीं था। इस विषय पर 'दीघनिकाय' नामक ग्रंथ में चर्चा की गई है। बौद्ध राजनीतिक चिंतन में चक्रवर्ती राजा की अवधारणा का उल्लेख किया गया है। चक्रवर्ती राजा प्रभुता संपन्न और धन-धान्य से संपन्न होता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार, जब युद्ध करना आवश्यक हो, तो युद्ध करना चाहिए। यदि पराजित शत्रु युद्ध में मारा न जाए, परन्तु मित्रता स्वीकार कर ले, तो उसे राज्य लौटा देना चाहिए और उसे अपने मित्र समूह में शामिल कर लेना चाहिए।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, यदि हम बौद्ध धर्म में राजनीतिक चिंतन के दर्शन का अध्ययन करें, तो यह दृष्टिगोचर होता है कि राजा को अपने राजनीतिक जीवन में लोक कल्याण करना चाहिए। प्रजा को सुखी और समृद्ध रखना चाहिए। चक्रवर्ती राजा को धर्म राज्य की स्थापना करनी चाहिए और पराजित राज्य को अपने मित्र समूह में शामिल करना चाहिए। राजा को दस राजधर्मों का पालन करना चाहिए और धर्म राज्य की स्थापना करनी चाहिए। राजनीति का आधार राजनीति में एक नीति स्थापित करना और समाज के प्रत्येक व्यक्ति और उसके हितों को सरल बनाना है। यहाँ नैतिकता पर आधारित राजनीति की वकालत करने का प्रयास किया गया है। नैतिकता पर आधारित राजनीतिक मामलों को महत्वपूर्ण माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शरण परमात्मा, प्राचीन भारत मे राजनीतिक विचार एवं संस्थाए, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, १९८४, पृ. क्र. १५३.
2. चौसाळकर अशोक, प्राचीन भारतीय राजकीय विचार, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, २०११, पृ. क्र. ४५.
3. कित्ता.
4. कुंभार नागोराव (संपा.), विचारशालाका, बौद्ध तत्वज्ञान विशेषांक, वर्ष ३३ वे, जानेवारी २०१९ ते सप्टेंबर २०१९, जोड आंक १२९,१३०,१३१, पृ. क्र. ११७.

Citation in APA 7th Edition: महाजन, . रायन . त्र्यंबकराव . (2025). बौद्ध धर्म में राजनीतिक विचार. Lyceum India Journal of Social Sciences, 2(4), 98–101. https://doi.org/10.5281/zenodo.17222803

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are those of the author(s) and do not necessarily reflect the official policy or position of the publisher or editorial board. The publisher assumes no responsibility for any consequences arising from the use of information contained herein.*